प्रधान मंत्री (श्री नरेन्द्र मोदी): माननीय अध्यक्ष जी, राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर धन्यवाद करने के लिए मैं उपस्थित हुआ हूं। आदरणीय राष्ट्रपति जी ने अपने अभिभाषण में आत्मनिर्भर भारत को लेकर और आकांक्षी भारत को लेकर गत दिनों के जो प्रयास हैं, उसके संबंध में विस्तार से बात कही है। मैं सभी आदरणीय सदस्यों का बहुत आभार व्यक्त करता हूं, जिन्होंने इस महत्वपूर्ण भाषण पर अपनी टिप्पणी की, अपने विचार रखें।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं अपनी बात बताने से पहले कल जो घटना घटी, उसके लिए दो शब्द जरूर कहना चाहूंगा। देश ने आदरणीय लता दीदी जी को खो दिया। इतने लम्बे काल तक, जिनकी आवाज ने देश को मोहित किया, देश को प्रेरित भी किया, देश को भावनाओं से भर दिया और एक अहर्निश सांस्कृतिक धरोहर को मजबूत करते हुए तथा देश की एकता को भी, करीब-करीब 36 भाषाओं में उन्होंने गाया। यह अपने आप में भारत की एकता और अखंडता के लिए भी एक प्रेरक उदाहरण है। मैं आज आदरणीय लता दीदी जी को आदरपूर्वक श्रद्धांजलि देता हूं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, इतिहास इस बात का गवाह है कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व में बहुत बड़ा बदलाव आया। एक नया वर्ल्ड ऑर्डर, जिसमें हम सब लोग जी रहे हैं, मैं साफ देख रहा हूं कि कोरोना काल के बाद विश्व एक नए वर्ल्ड ऑर्डर की तरफ, नई व्यवस्थाओं की तरफ बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है। एक ऐसा टर्निंग पॉइंट है कि हम लोगों को एक भारत के रूप मे इस अवसर को गंवाना नहीं चाहिए। मेन टेबल पर भारत की आवाज़ भी बुलंद रहनी चाहिए। भारत को एक लीडरशिप रोल के लिए अपने आपको कम नहीं आंकना चाहिए। इस परिप्रेक्ष्य में आजादी का अमृत महोत्सव, आजादी के 75 साल अपने आप में प्रेरक अवसर है। उस प्रेरक अवसर को ले कर, नए संकल्पों को ले कर, देश जब आजादी के सौ साल मनाएगा, तब तक पूरे सामर्थ से, पूरी शक्ति से, पूरे समर्पण से, पूरे संकल्प से, देश को उस जगह पर ले कर पहुंचेंगे। यह संकल्प का समय है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, बीते वर्षों में देश ने कई क्षेत्रों में मूलभूत व्यवस्थाओं में बहुत मजबूती का अनुभव किया है और बहुत मजबूती के साथ हम आगे बढ़े हैं। प्रधान मंत्री आवास योजना - गरीबों को रहने के लिए घर हो, यह कार्यक्रम तो लंबे समय से चला है । लेकिन जो गति, जो व्यापकता, विशालता, विविधता, उसने उसमें स्थान पाया, उसके कारण आज गरीब का घर भी लाखों से भी ज्यादा कीमत का बन रहा है। एक प्रकार से जो भी पक्का घर पाता है, वह गरीब आज लखपति की श्रेणी में भी आ जाता है। कौन हिंदुस्तानी होगा, जिसको इस बात को सुन कर के गर्व न हो कि आज देश के गरीब से गरीब के घर में शौचालय बना है। आज खुले में शौच से देश के गांव भी मुक्त हुए हैं। कौन इसको सुन कर खुश नहीं होगा? … (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : अधीर रंजन जी, प्लीज़ बैठिए। यह तरीका ठीक नहीं है।

… (व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : हो गया? … (व्यवधान) मैं बैठने के लिए तैयार हूँ। …(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : अधीर रंजन जी, प्लीज़ बैठिए।

… (व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : आपको धन्यवाद दे कर के शुरू करूं? … (व्यवधान) आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। …(व्यवधान) आपका प्यार अजर-अमर रहेगा। …(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : अधीर जी, प्लीज।

… (व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : आजादी के इतने सालों के बाद गरीब के घर में भी रौशनी होती है, तो उसकी खुशियां, देश की खुशियों को ताकत देती है। चूल्हे के धुएं से जलती हुई आंखों के साथ काम करने वाली गरीब माँ को राहत देती है। जिस देश में, घर में गैस कनेक्शन हो, यह स्टेटस सिंबल बन चुका था, उस देश में गरीब के घर में गैस का कनेक्श्न हो, धुएं वाले चूल्हे से मुक्ति हो, तो उसका आनंद कुछ और ही होता है। ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : दादा, प्लीज़ बैठिए। आपको मैंने पर्याप्त मौका दिया था। यह तरीका ठीक नहीं है।

... (व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : दादा को बीच-बीच में मौका देना चाहिए। क्योंकि दादा उम्र के इस पड़ाव में भी बचपने का मजा लेते रहते हैं। ...(व्यवधान)

आज गरीब का बैंक में अपना खाता हो, आज बैंक गए बिना, गरीब भी अपने टेलिफोन से बैंक के खाते का उपयोग करता हो, सरकार के द्वारा दी गयी राशि सीधे 'डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर ' के तहत उसके खाते में पहुंचती हो, ये सब, अगर आप ज़मीन से जुड़े हुए होते, अगर आप जनता के बीच में रहते होते तो जरूर ये चीजें नजर आतीं, दिखाई देतीं। लेकिन, दुर्भाग्य यह है कि आपमें से बहुत-से लोग ऐसे हैं, जिनका सूई-कांटा वर्ष 2014 से अटका हुआ है और उससे वे बाहर ही नहीं निकल पाते हैं। उसका नतीजा भी आपको भुगतना पड़ा है। आपने अपने आपको एक ऐसी मानसिक अवस्था से बाँध कर रखा है कि देश की जनता आपको पहचान गई है। कुछ लोग पहले पहचान गए, कुछ लोग देर से पहचान रहे हैं और कुछ लोग आने वाले समय में पहचानने वाले हैं। अब देखिए आप, जब इतना सारा लम्बा उपदेश देते हैं, तब भूल जाते हैं कि पचास सालों तक कभी आपने भी देश में यहाँ बैठने का सौभाग्य प्राप्त किया था और क्या कारण है कि आप सोच नहीं पाते हैं?

अब आप देखिए, नागालैण्ड के लोगों ने आखिरी बार वर्ष 1998 में काँग्रेस के लिए वोट किया था, करीब 24 साल हो गए। ओडिशा ने वर्ष 1995 में आपके लिए वोट किया था, सिर्फ 27 साल हो गए, आपको वहां एन्ट्री नहीं मिली। गोवा में वर्ष 1994 में पूर्ण बहुमत के साथ आप जीते थे, 28 साल हो गए, गोवा ने आपको स्वीकार नहीं किया। …(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी (बहरामपुर): सर, आपने सब खरीद कर लिया, क्या करें?

श्री नरेन्द्र मोदी : पिछली बार वर्ष 1988 में त्रिपुरा में वहां की जनता ने वोट दिया था, करीब 34 साल पहले। काँग्रेस का क्या हाल है - यू.पी., बिहार और गुजरात में? आखिर में, वर्ष 1985 में, करीब 37 साल पहले आपके लिए वोट किया था। पिछली बार पश्चिम बंगाल में वहां के लोगों ने वर्ष 1972 में, करीब 50 साल पहले आपको पसन्द किया था। …(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी: प्राइम मिनिस्टर साहब, क्या यह राष्ट्रपति जी के अभिभाषण की बातें हैं? आप ही बताइए।

माननीय अध्यक्ष: प्लीज़, बैठ जाइए। आप कागज़ लेकर बाद में बोल लेना।

… (व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : मैं इसके लिए सहमत हूं, अगर आप उस मर्यादा का पालन करते और इस जगह का उपयोग न करते। लेकिन, देश का बड़ा दुर्भाग्य है कि सदन जैसी पवित्र जगह, जो देश के लिए काम आनी चाहिए, उसको दल के लिए काम में लेने का जो प्रयास हो रहा है, इसके कारण जवाब देना हमारी मजबूरी बन जाती है। …(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, तमिलनाडु में, आखिर में, वर्ष 1962 में यानी करीब 60 साल पहले, आपको मौका मिला था । तेलंगाना बनाने का श्रेय लेते हैं, लेकिन तेलंगाना बनने के बाद वहां की जनता ने आपको स्वीकार नहीं किया। …(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी : तमिलनाडु में तो आप नहीं हैं।

श्री नरेन्द्र मोदी : झारखण्ड का जन्म हुआ, बीस साल हो गए, पूर्ण रूप से काँग्रेस को स्वीकारते नहीं हैं। वे पिछले दरवाजे से घुसने का प्रयास करते हैं।

माननीय अध्यक्ष जी, सवाल चुनाव नतीजों का नहीं है, सवाल उन लोगों की नीयत का है, उनकी नेकदिली का है । इतने बड़े लोकतंत्र में, इतने साल तक शासन में रहने के बाद भी देश की जनता हमेशा-हमेशा के लिए उनको क्यों नकार रही है? जहाँ भी ठीक से लोगों ने राह पकड़ ली, दोबारा आपको प्रवेश करने नहीं दिया है। इतना सब होने के बावजूद, हम तो एक चुनाव हार जाए न, महीनों तक न जाने इको-सिस्टम क्या-क्या करती है? इतना सारी पराजय होने के बावजूद भी, न आपका अहंकार जाता है, न आपकी इको-सिस्टम आपके अहंकार को जाने देती है। …(व्यवधान)

इस बार अधीर रंजन जी बहुत सारे शेर सुना रहे थे। चलिए, मौका मैं भी ले लूं। …(व्यवधान) जब अहंकार की बात मैं कर रहा हूँ तब तो मुझे कहना ही पड़ेगा-

वो जब दिन को रात कहें तो तुरंत मान जाओ,
नहीं मानोगे तो वो दिन में नकाब ओढ़ लेंगे,
जरुरत हुई तो हकीकत को थोड़ा-बहुत मरोड़ लेंगे,
वो मग़रूर हैं खुद की समझ पर बेइंतहा,
उन्हें आइना मत दिखाओ, वो आइने को भी तोड़ देंगे।

आदरणीय अध्यक्ष जी, आजादी का 'अमृत महोत्सव'; आजादी के 75 वर्ष में आज देश आजादी का मना रहा है और देश अमृत काल में प्रवेश कर रहा है 'अमृत महोत्सव' ।आजादी की इस लड़ाई में जिन-जिन लोगों ने योगदान किया, वो किसी दल के थे या नहीं थे, इन सब से परे उठकर, देश के लिए जीने-मरने वाले लोग, देश के लिए जवानी खपाने वाले लोग, हर किसी का पुण्य स्मरण करने का अवसर है, उनके सपनों को याद करते हुए, कुछ संकल्प लेने का अवसर है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, हम सब संस्कार से, स्वभाव से, व्यवस्था से लोकतंत्र के लिए प्रतिबद्ध लोग हैं और आज से नहीं, सदियों से हैं। यह भी सही है कि आलोचना जीवंत लोकतंत्र का एक आभूषण है, लेकिन अंधविरोध लोकतंत्र का अनादर है। सबका प्रयास, इस भावना से भारत ने जो कुछ हासिल किया है, अच्छा होता कि उसे खुले मन से स्वीकार किया गया होता, उसका स्वागत किया गया होता, उसका गौरव-गान करते।

बीते दो सालों में सौ साल का सबसे बड़ा वैश्विक महामारी का संकट पूरी दुनिया की मानव जाति झेल रही है। जिन्होंने भारत के अतीत के आधार पर ही भारत को समझने का प्रयास किया, उनको तो आशंका थी कि इतना बड़ा विशाल देश, इतनी बड़ी आबादी, इतनी विविधताएं, ये आदतें, यह स्वभाव, शायद यह भारत इतनी बड़ी लड़ाई नहीं लड़ पाएगा, भारत अपने आपको बचा नहीं पाएगा। यही उनकी सोच थी, लेकिन आज स्थिति क्या है? मेड इन इंडिया कोविड वैक्सीन दुनिया में सबसे ज्यादा प्रभावी है। आज भारत शत-प्रतिशत पहली डोज़, इस लक्ष्य के निकट करीब-करीब पहुंच रहा है और लगभग 80 प्रतिशत सेकेंड डोज़, उसका पड़ाव भी पूरा कर लिया है।

माननीय अध्यक्ष जी, कोरोना एक वैश्विक महामारी है, लेकिन उसे भी दलगत राजनीति के लिए उपयोग में लाया जा रहा है। क्या यह मानवता के लिए अच्छा है? भारत जैसे …(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आपको मैं मौका दूंगा।

… (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : प्लीज बैठिए।

… (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : अधीर रंजन जी**,** आपको पर्याप्त समय और पर्याप्त अवसर मिला है।

… (व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी : हम लोगों ने साथ दिया था। …(व्यवधान) हिंदुस्तान के सारे सूबों ने साथ दिया था। …(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : प्लीज बैठिए।

… (व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी: माननीय अध्यक्ष जी**,** मैंने तो किसी का नाम नहीं लिया। कोई भी टोपी पहन लेने की क्या जरूरत है जी?… (व्यवधान) लेकिन जब आप खड़े ही हो गए हैं**,** तो अब मैं नाम ले करके बोलना चाहता हूं। …(व्यवधान) अब आप खड़े ही हो गए हैं, तो मैं नाम ले करके बोलना चाहता हूं। इस कोरोना काल में कांग्रेस ने तो हद कर दी। …(व्यवधान) पहली लहर के दौरान …(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : मैं आपको मौका दूंगा।

… (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : प्लीज बैठिए।

… (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य, प्लीज बैठिए। यह तरीका ठीक नहीं है। आपको मैंने पर्याप्त मौका दिया।

… (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : प्लीज, बैठिए।

… (व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी: माननीय अध्यक्ष जी, अभी तो मैंने सिर्फ इतना कहा, हद कर दी।…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आपको मैंने पर्याप्त अवसर दिया था।

… (व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी: पहली लहर के दौरान देश जब लॉक डाउन का पालन कर रहा था, जब डब्ल्यूएचओ दुनिया भर के लोगों को सलाह देता था, सारे हेल्थ एक्सपर्ट्स कह रहे थे कि जो जहां है, वहीं पर रुके। …(व्यवधान) सारी दुनिया में यह संदेश दिया जाता था, क्योंकि मनुष्य जहां जाएगा, अगर वह कोरोना से संक्रमित है, तो कोरोना साथ ले जाएगा। …(व्यवधान) तब कांग्रेस के लोगों ने क्या किया?… (व्यवधान) मुंबई के रेलवे स्टेशन पर खड़े रह करके, मुंबई छोड़ कर जाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए मुंबई में श्रमिकों को मुफ्त में टिकट दिया गया। …(व्यवधान) लोगों को प्रेरित किया गया कि जाओ, महाराष्ट्र में हमारे ऊपर जो बोझ है, वह जरा कम हो।…(व्यवधान) जाओ, तुम उत्तर प्रदेश

के हो, तुम बिहार के हो ...(व्यवधान) जाओ, वहां कोरोना फैलाओ। ...(व्यवधान) आपने यह बहुत बड़ा पाप किया। ...(व्यवधान) वहां अफरा-तफरी का माहौल खड़ा कर दिया। ...(व्यवधान)

आपने हमारे श्रमिक भाइयों-बहनों को अनेक परेशानियों में धकेल दिया ...(व्यवधान), उस समय दिल्ली में ऐसी सरकार थी, जो अभी भी है। उस सरकार ने जीप पर माइक बांध करके दिल्ली की झुग्गी-झोपड़ी में गाड़ी घुमाकर कहा कि संकट बड़ा है, गांव जाओ, घर जाओ और दिल्ली से जाने के लिए बसें दीं, आधे रास्ते में छोड़ दिया, और श्रमिकों के लिए अनेक मुसीबतें पैदा कीं, ... (व्यवधान) उसके कारण यूपी, उत्तराखंड और पंजाब में जहां कोरोना की इतनी गति नहीं थी, इतनी तीव्रता नहीं थी, इस पाप के कारण कोरोना ने उनको भी लपेटे में ले लिया।

माननीय अध्यक्ष जी, यह कैसी राजनीति है, मानव जाति के ऊपर संकट के समय भी दलगत राजनीति कब तक चलेगी? मैं ही नहीं पूरा देश कांग्रेस के इस आचरण से अचम्भित है। दो साल से देश सौ साल के सबसे बड़े संकट का मुकाबला कर रहा है। कुछ लोगों ने जिस प्रकार से व्यवहार किया, देश सोच में पड़ गया है, क्या यह देश आपका नहीं है? क्या इस देश के लोग आपके नहीं हैं? क्या उनके सुख-दुख आपके नहीं हैं?

श्री अधीर रंजन चौधरी : आप कैसी बातें कर रहे हैं? ... (व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी: अध्यक्ष जी, इतना बड़ा संकट आया, कई राजनीतिक दल के नेता जरा आत्मनिरीक्षण करें, ... (व्यवधान) इतने राजनीतिक दल के नेता जो जनता के माने हुए नेता अपने आप को मानते हैं, उन्होंने लोगों से रिक्वैस्ट की कि कोरोना एक ऐसा संकट है, वैश्विक महामारी है, आप मास्क पहनो, हाथ धोते रहो, दो गज की दूरी रखो। कितने नेता हैं, अगर इसे बार-बार देश की जनता को कहते तो उससे बीजीपी की सरकार को क्या फायदा होने वाला था? मोदी को क्या फायदा होने वाला था? लेकिन इतने बड़े संकट में भी इतना सा पवित्र काम करने से आप चूक गए।

माननीय अध्यक्ष जी, कुछ लोग हैं, उनको यह इंतजार था कि कोरोना वायरस मोदी की छवि को चपेट में ले लेगा। बहुत इंतजार किया और कोरोना ने भी आपके धैर्य की बड़ी कसौटी की है। आए दिन आप लोग औरों को नीचा दिखाने के लिए महात्मा गांधी का नाम लेते हैं। महात्मा गांधी की स्वदेशी की बात को बार-बार दोहराने से आपको कौन रोक रहा है?

अगर मोदी कहता है 'वोकल फॉर लोकल', मोदी ने कहा इसलिए शब्दों को छोड़ दो। लेकिन क्या आप नहीं चाहते हैं कि देश आत्मनिर्भर बने, जिस महात्मा गांधी के आदर्शों की बात करते हैं तब भारत में इस अभियान को ताकत देने या जुड़ने में क्या जाता था? उसका आप नेतृत्व लीजिए, महात्मा गांधी जी के स्वदेश के निर्णय को आगे बढ़ाइए, देश का भला होगा और हो सकता है। क्या आप महात्मा गांधी के सपनों को सच होते नहीं देखना चाहते हैं? आज पूरी दुनिया में योग ने कोरोना के समय में एक प्रकार से जगह बना ली।

दुनिया भर में कौन हिंदुस्तानी होगा, जिसको योग के लिए गर्व न हो। आपने उसका भी मज़ाक उड़ाया, उसका भी विरोध किया। अच्छा होता कि आप लोगों को कहते कि संकट में घर में हैं, योगा कीजिए, आपको फायदा होगा। क्या नुकसान था? फिट इंडिया मूवमेंट चले, देश का नौजवान सशक्त हो, सामर्थ्यवान हो। आपको मोदी से विरोध हो सकता है। मूवमेंट 'फिट इंडिया', राजनैतिक दलों के छोटे-छोटे युवा मंच होते हैं। अगर हम सब मिलकर द्वारा देश की युवा शक्ति को इस 'फिट इंडिया' गे बढ़ने के लिए कहतेसामर्थ्य की तरफ आ, लेकिन उसका भी विरोध, उसका भी उपहास। आपको क्या हो गया है? यह मुझे समझ में नहीं आ रहा है। मैं आज इसलिए कह रहा हूं कि आपको ध्यान में आए कि आप कहां खड़े हैं। मैंने इतिहास बताया, 60 साल से लेकर, 15 साल से पूरा कार्य, पूरा कालखंड, इतने राज्य, कोई आपको घुसने नहीं दे रहा है। ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, मैं यह विषय बहुत प्यार से कह रहा हूं, नाराज़ मत हो जाना। ...(व्यवधान) मुझे कभी विचार आता है, उनके बयानों से, उनके कार्यक्रमों से, उनकी करतूतों से, जिस प्रकार से बोलते हैं, जिस प्रकार के मुद्दों से जुड़ते हैं, ऐसा लगता है कि आपने मन बना लिया है कि 100 साल तक सत्ता में नहीं आना है। ...(व्यवधान) कोई ऐसा नहीं करता है, जी। थोड़ी सी भी आशा होती, थोड़ा सा भी लगता कि हाय, अब देश की जनता फिर से कुल्हार करेगी, तो ऐसा नहीं करते। खैर, अब आपने ही तय कर लिया है 100 साल के लिए तो फिर मैंने भी तैयारी कर ली है। ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, यह सदन इस बात का साक्षी है कि कोरोना वैश्विक महामारी से जो स्थितियां बनीं, जो स्थितियां उत्पन्न हुईं, उससे निपटने के लिए भारत ने जो भी रणनीति बनाई, उसको लेकर डे वन से क्या-क्या नहीं कहा गया? किस-किसने क्या बोला? आज वह खुद देखेंगे तो उनको हैरानी होगी कि ऐसा कैसे बुलवा लिया? कैसे बुलवा लिया और पता नहीं, हम क्या-क्या बोल दिए? दुनिया के और लोगों से कांफ्रेंस करके ऐसी बातें बुलवाई गईं ताकि पूरे विश्व में भारत बदनाम हो। खुद के टिके रहने के लिए आर्थिक आयोजन में भारत कैसा चल रहा है? बाई गॉड, क्या कुछ कहा गया? बड़े-बड़े पंडितों ने क्या-क्या कहा? आपकी पूरी ईको सिस्टम लग गई थी। हम जो भी समझते थे, भगवान ने जो समझ दी थी, लेकिन समझ से ज्यादा समर्पण बड़ा था। जहां समझ से समर्पण ज्यादा बड़ा होता है, वहां देश और दुनिया को अर्पण करने की ताकत भी होती है और हमने वह करके दिखाया है। हम जिस रास्ते पर चले, आज विश्व के अर्थ जगत के सभी ज्ञाता इस बात को मानते हैं कि भारत ने जिन आर्थिक नीतियों को लेकर इस कोरोना कालखंड में अपने आपको आगे बढ़ाया है, वह अपने आप में उदाहरणीय है। हम अनुभव भी करते हैं, हमने देखा है। ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, भारत आज दुनिया की बड़ी इकोनामीज़ में सबसे तेजी से विकसित हो रही बड़ी अर्थव्यवस्था है । …(व्यवधान) इस कोरोना कालखंड में हमारे किसानों ने रिकॉर्ड पैदावार की । … (व्यवधान) सरकार ने रिकॉर्ड खरीदी की । दुनिया के अनेक देशों में जहां खाने का संकट पैदा हुआ। आपको पता होगा, 100 साल पहले जो आपदा आई थी, उसकी जो रिपोर्ट है, उसमें यह बात कही गई है कि बीमारी से मरने वालों की जैसी तादाद है, वैसी भूख से मरने वालों की भी बड़ी तादाद है।

18.00hrs

यह उस समय की, 100 साल पहले की रिपोर्ट में है। इस देश ने किसी को भूख से मरने नहीं दिया। हमने 80 करोड़ से अधिक देशवासियों को मुफ्त राशन उपलब्ध कराया और आज भी करा रहे हैं।

माननीय अध्यक्ष जी, हमारा टोटल एक्सपोर्ट हिस्टोरिकल और हाइएस्ट रेकॉर्ड पर है। यह कोरोना काल में है। कृषि एक्सपोर्ट ऐतिहासिक तौर पर टॉप पर पहुंचा है। सॉफ्टवेयर एक्सपोर्ट नई ऊंचाई की तरफ बढ़ रहा है। मोबाइल फोन एक्सपोर्ट में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। डिफेंस एक्सपोर्ट, इसमें कई लोगों को परेशानी हो रही है। यह का कमाल है कि आज देश डिफेंस 'आत्मनिर्भर भारत' एक्सपोर्ट में भी अपनी पहचान बना रहा है। … (व्यवधान) एफडीआई और एफपीआई …(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य**,** आप चुप रहिए। आप शांत रहिए।

… (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य**,** प्लीज आप शांत हो जाइए।

… (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य, एक मिनट आप भी चुप रहिए।

… (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आप चुप रहिए। आपको बोलने की इजाजत किसने दी है?

… (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, मैंने सभी माननीय सदस्यों को पर्याप्त समय और पर्याप्त अवसर दिया है। लेकिन, जब आपने बोला, तो मैंने कहा कि जब इस सदन के नेता बोलेंगे तो कोई टीका-टिप्पणी नहीं करेंगे। यह उचित व्यवहार नहीं है। सदन के नेता बोल रहे हैं। आप सदन की गरिमा को बनाए रखिए। यह मेरा आपसे आग्रह है।

श्री अधीर रंजन चौधरी : सर, हम गरिमा बनाकर बात कर रहे हैं।

माननीय अध्यक्ष : मैं आपको बोलने का मौका दूंगा।

… (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप बैठ जाइए। मैंने आपको मौका नहीं दिया है।

माननीय प्रधान मंत्री जी।

… (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : दादा, क्या मैंने आपको मौका नहीं दिया है?

… (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य, हां, हम समझेंगे और समझाएंगे । आप पूरा सुनिए हम सब समझाएंगे।

… (व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी: अध्यक्ष जी, सदन में थोड़ी-बहुत टोका-टोकी तो आवश्यक होती है । उससे गर्मी रहती है, लेकिन जब वह सीमा के बाहर जाता है, तो लगता है कि हमारे साथी ऐसे हैं? … (व्यवधान) उनकी पार्टी के एक एमपी ने चर्चा की शुरुआत की थी। यहां से कुछ छोटा-मोटा नोक-झोंक चल रहा था। मैं अपने कमरे से स्क्रीन पर देख रहा था कि हमारे मंत्री प्रहलाद जी पीछे गए और सबको रोका। वहां से चैलेंज आया कि अगर हमें रोकोगे, तो तुम्हारे नेता का यह हाल करेंगे, क्या इसीलिए यह हो रहा है? … (व्यवधान) हरेक को अपना सीआर सुधारने की कोशिश करनी चाहिए। मैं मानता हूं कि जितना आपने किया है, उससे आपका सीआर ठीक हो गया है। जिन लोगों को रजिस्टर करना है, आपके इस पराक्रम को कर लिया है। आप ज्यादा क्यों कर रहे हैं? … (व्यवधान) इस सत्र में आपको कोई नहीं निकालेगा। आप विश्वास कीजिए। इस सत्र में आपको कोई नहीं निकालेगा, मैं आपको गारंटी देता हूं।

…(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी : मैं यहां जनता द्वारा चुने गए नुमाइंदे के रूप में आया हूं।

माननीय अध्यक्ष : ठीक है।

… (व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी: माननीय अध्यक्ष जी**,** आज भारत में एफडीआई और एफपीआई का रेकॉर्ड निवेश हो रहा है। रिन्यूएबल एनर्जी के क्षेत्र में आज हिन्दुस्तान दुनिया के टॉप फाइव कंट्रीज में है।

माननीय अध्यक्ष जी, ये सब इसलिए संभव हुआ है कि कोरोना काल में इतना बड़ा संकट सामने होने के बावजूद भी, अपने कर्तव्यों को निभाते हुए इस संकट के काल में देश को बचाना है, तो रिफॉर्म्स जरूरी थे। हमने वे जो रिफॉर्म्स किए, उसका परिणाम है कि हम आज इस स्थिति पर पहुंचे हैं।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य**,** प्लीज आप बैठ जाइए। यह आपका गलत तरीका है।

... (व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : माननीय अध्यक्ष जी, एमएसएमईज़ सहित हर उद्योग को जरूरी सपोर्ट दिया।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य**,** आप बैठ जाइए। सदन ऐसे नहीं चलेगा।

... (व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : हमने नियमों को, प्रक्रियाओं को सरल किया। का जो मिशन है 'आत्मनिर्भर भारत', हमने उसको चरितार्थ करने की भरपूर कोशिश की है। ये सारी उपलब्धियां ऐसे हालातों में देश ने हासिल की हैं, जब अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक जगत में बहुत बड़ी उथल-पुथल आज भी चल रही है। सप्लाई चेन पूरी तरह चरमरा गई है, लॉजिस्टिक सपोर्ट में अनेक संकट पैदा हुए हैं। दुनिया में सप्लाई चेन की वजह से केमिकल फर्टिलाइजर पर कितना बड़ा संकट आया है और भारत आयात करने पर डिपेन्डेंट है। देश पर कितना बड़ा आर्थिक बोझ आया है। पूरे विश्व में ऐसे हालात पैदा हुए हैं,

लेकिन भारत ने किसानों को इस पीड़ा को झेलने के लिए मज़बूर नहीं किया। वह सारा बोझ देश ने अपने कंधों पर उठाया और किसानों पर ट्रांसफर नहीं होने दिया है।...(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी : बजट में कटौती हुई है।...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : भारत ने फर्टिलाइजर की सप्लाई को भी निरंतर जारी रखा है। कोरोना के संकट काल में भारत ने अपनी खेती को, अपने छोटे किसानों को संकट से बाहर निकालने के लिए बड़े फैसले लिए हैं। मैं कभी-कभी सोचता हूं कि जो लोग जड़ों से कटे हुए लोग हैं, दो-दो, चार-चार पीढ़ियों से महलों में बैठने की आदत हो गई है, देश के छोटे किसानों की क्या समस्याएं हैं, वे समझ ही नहीं पाए हैं। उनके अगल-बगल में जिन किसानों तक उनकी पहुंच थी, वे उससे आगे देख नहीं पाए हैं। मैं ऐसे लोगों से पूछना चाहता हूं कि छोटे किसानों के प्रति आपको इतनी नफ़रत क्यों है?...(व्यवधान) क्या आप छोटे किसानों के कल्याण के लिए रोड़े अटकाते रहते हैं?...(व्यवधान) आप छोटे किसानों को इस संकट में डालते हैं।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, अगर गरीबी से मुक्ति चाहिए, तो हमें हमारे छोटे किसानों को मज़बूत बनाना होगा।...(व्यवधान) अगर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मज़बूत बनाना है, तो हमारे छोटे किसानों को मज़बूत बनाना होगा। अगर हमारा छोटा किसान मज़बूत होता है, छोटी-सी ज़मीन होगी, अगर दो हेक्टेयर की भूमि होगी, तो भी वह उसको आधुनिक करने का प्रयास करेगा, कुछ नया सीखने का प्रयास करेगा और उसकी ताकत आएगी, तो देश की अर्थरचना को भी ताकत मिलेगी। इसलिए आधुनिकता के लिए छोटे किसानों की तरफ ध्यान देने का हमारा प्रयास है, लेकिन जिन लोगों के मन में छोटे किसानों के प्रति नफ़रत है, जिन्होंने छोटे किसानों का दुःख-दर्द नहीं जाना है, उनको किसानों के नाम पर अपनी राजनीति करने का कोई हक नहीं बनता है।

माननीय अध्यक्ष जी, इस बात को हमें समझना होगा कि सैकड़ों वर्षों का गुलामी कालखंड है, उसकी जो मानसिकता है, कुछ लोग आज़ादी के 75 सालों के बाद भी बदल नहीं पाए हैं। ये गुलामी की मानसिकता किसी भी राष्ट्र की प्रगति के लिए बहुत बड़ा संकट होती है। लेकिन आज मैं देश का एक चित्र देखता हूं, एक ऐसा समुदाय, एक ऐसा वर्ग है, वह आज भी गुलामी की मानसिकता में जीता है। आज भी 19वीं सदी के काम और उस सोच में वह जकड़ा हुआ है। 20वीं सदी के जो कानून हैं, वे ही कानून उसको कानून लगते हैं। गुलामी की मानसिकता, 19वीं सदी का रहन-सहन, 20वीं सदी के कानून, 21वीं सदी की आकांक्षाएं पूरी नहीं कर सकते हैं। 21वीं सदी के अनुकूल बदलाव बहुत जरूरी हैं।

माननीय अध्यक्ष जी, हमने जिस बदलाव को अस्वीकार किया, उसका परिणाम क्या आया? फ्रेट कॉरिडोर, इतने मनोमंथन के बाद, कई वर्षों के बाद यह योजना बनी। इसकी वर्ष 2006 में प्लानिंग हुई। आप उसका वर्ष 2006 से लेकर वर्ष 2014 तक का हाल देखिए। वर्ष 2014 के बाद से उसमें तेजी आई। यूपी में 'सरयू नहर परियोजना'70 के दशक में शुरू हुई और उसकी लागत 100 गुना बढ़ गई। हमारे आने के बाद हमने उस काम को पूरा किया। यह कैसी सोच है, क्या तरीके हैं? यूपी की वर्ष 'अर्जुन डैम परियोजना'2009 में शुरू हुई थी। उसमें वर्ष 2017 तक एक तिहाई खर्चा हुआ था।

हमने इतने कम समय में उस परियोजना को पूर्ण कर दिया। कांग्रेस के पास इतने सालों तक सत्ता थी तो वे चारधाम को ऑल वेदर सड़कों में परिवर्तित कर सकते थे, जोड़ सकते थे, लेकिन उन्होंने नहीं किया। वाटरवेज, पूरी दुनिया वाटरवेज को समझती है, लेकिन हमारा ही देश था कि हमने वाटरवेज को नकार दिया। आज हमारी सरकार वाटरवेज पर काम कर रही है। पुरानी अप्रोच से

गोरखपुर का कारखाना बंद होता था, लेकिन हमारी अप्रोच से गोरखपुर का फर्टिलाइजर का कारखाना शुरू होता है। ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, ये लोग ऐसे हैं, जो जमीन से कटे हुए हैं, उसके कारण उनके लिए फाइल की मूवमेंट, फाइल में सिग्नेचर करके कौन अगला मुलाकाती आएगा, उसी के इंतजार में ये रहते हैं। आपके लिए फाइल सब कुछ है। हमारे लिए 130 करोड़ देशवासियों की लाइफ महत्वपूर्ण है। आप फाइल में खोए रहे, हम लाइफ बदलने के लिए जी जान से जुटे रहे। ...(व्यवधान) आज उसी का परिणाम है शक्ति मास्टर प्लान प्रधान मंत्री गति ।यह एक हॉलिस्टिक एप्रोच है , टुकड़ों में नहीं है कि आधा काम वहां हो रहा है, रोड बन रही है, फिर बिजली वाला आकर खुदाई करता है। वह चीज ठीक होती है, फिर पानी वाला आकर खुदाई करता है। इन सारी समस्याओं से बाहर आकर हम डिस्ट्रिक्ट लेवल तक गति शक्ति मास्टर प्लान की दिशा में काम कर रहे हैं। उसी प्रकार से हमारे देश की विशेषता को देखते हुए हम 'मल्टी मॉडल ट्रांसपोर्ट ' सिस्टम पर बड़ा जोर दे रहे हैं और कनेक्टिविटी के आधार पर हम इस पर जोर दे रहे हैं ।

माननीय अध्यक्ष जी, आजादी के बाद सबसे तेज गति से ग्रामीण सड़कें बन रही हैं तो इन पांच सालों के कालखंड में बन रही हैं। नेशनल हाईवेज़ बन रहे हैं। रेलवे लाइनों का बिजलीकरण हो रहा है। आज देश नए एयरपोर्ट्स, हैलीपोर्ट्स और वाटरड्रॉम का नेटवर्क खड़ा कर रहा है। देश के 6 लाख से अधिक गांवों में ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क के लिए काम चल रहा है।

माननीय अध्यक्ष जी, ये सारे काम ऐसे हैं, जो रोज़गार देते हैं। ज्यादा से ज्यादा रोज़गार इन्हीं कामों से मिलता है। आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर आज देश की आवश्यकता है और अभूतपूर्व निवेश भी हो रहा है और उसी से रोज़गार भी बढ़ना है, विकास भी बढ़ना है, विकास की गति भी बढ़नी है और इसीलिए आज देश उस दिशा में काम कर रहा है।

माननीय अध्यक्ष जी, अर्थव्यवस्था जितनी ज्यादा ग्रो करेगी, उतने ही रोज़गार के अवसर पैदा होंगे और इसी लक्ष्य को लेकर पिछले सात सालों से हमने इन चीजों पर फोकस किया है और उसका परिणाम है, हमारा 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' ।मैन्युफैक्चरिंग हो या सभी सेक्टर्स हों , हर सेक्टर में हमारा उत्पादन बढ़ रहा है । की वजह से आज हम ग्लोबल वैल्यू चेन 'आत्मनिर्भर भारत अभियान'के हिस्से बन रहे हैं । यह अपने आप में भारत के लिए एक अच्छी निशानी है । हमारा बड़ा फोकस एमएसएमई और टेक्सटाइल्स जैसे लेबर इंसेंटिव सेक्टर्स में है। ...(व्यवधान) एमएसएमई की परिभाषा में हमने सुधार करके उसको भी नए अवसर दिए हैं।

अपने छोटे उद्योगों को सुरक्षित करने के लिए, एमएसएमईज के लिए सरकार ने इस कोरोना के विकट कालखण्ड में 3 लाख करोड़ रुपये की विशेष योजना भी शुरू की है और उसका लाभ हमारे एमएसएमई सेक्टर को मिला है । इसकी एक बहुत बढ़िया स्टडी एसबीआई ने की है । एसबीआई की स्टडी कहती है कि साढ़े तेरह लाख एमएसएमईज इस योजना के कारण बर्बाद होने से बच गए । एसबीआई की स्टडी कहती है कि डेढ़ करोड़ नौकरियां बची हैं और करीब 14 प्रतिशत एमएसएमईज के लोन्स के कारण एनपीए होने की जो संभावना थी, वे उससे बच गए।

माननीय अध्यक्ष जी, जो सदस्य जमीन पर जाते हैं, वे इसके प्रभाव को देख सकते हैं । विपक्ष के भी कई साथी मुझे मिलते हैं, कहते हैं कि इस योजना ने बहुत बड़ा लाभ दिया है और एमएसएमई सेक्टर को इस संकट की घड़ी में बहुत बड़ा सहारा दिया है।

माननीय अध्यक्ष जी, उसी प्रकार से मुद्रा योजना इतनी सफल रही है, हमारी कितनी माताएं-बहनें इस क्षेत्र में आई हैं और लाखों लोग बिना गारन्टी, बैंक से लोन लेकर, अपने स्वरोजगार की दिशा में आगे बढ़े हैं। वे खुद तो करते ही हैं, एक-दो अन्य लोगों को रोजगार भी देते हैं।

स्वनिधि योजना, स्ट्रीट वेंडर्स – कभी हमने सोचा नहीं था । आजादी के बाद पहली बार स्ट्रीट वेंडर्स को बैंक के अंदर से लोन मिल रहा है, हमारा स्ट्रीट वेंडर डिजिटल ट्रांसजैक्शन कर रहा है और करोड़ों श्रमिकों को लाभ मिल रहा है । हमने गरीब श्रमिकों के लिए 2 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा खर्च किए हैं। आत्मनिर्भर भारत रोजगार योजना के तहत हजारों लाभार्थियों के खाते में हमने सीधे पैसे ट्रांसफर किए।

माननीय अध्यक्ष जी, इंडस्ट्री को गति देने के लिए बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर की बहुत जरूरत होती है। पीएम गतिशक्ति मास्टर प्लान हमारी लॉजिस्टिक्स कॉस्ट को बहुत कम करेगा और उसके कारण देश में भी माल सस्ते में पहुंच पाएगा और एक्सपोर्ट करने वाले लोग भी दुनिया के साथ कम्पिटिशन कर पाएंगे। पीएम गतिशक्ति प्लान इसलिए आने वाले दिनों में बहुत लाभकारक होने वाला है।

माननीय अध्यक्ष जी, सरकार ने एक और बड़ा काम किया है। नए क्षेत्रों को एंटरप्रिन्योर्स के लिए हमने ओपन कर दिया है। आत्मनिर्भर भारत योजना के तहत स्पेस, डिफेंस, ड्रोन्स और माइनिंग में प्राइवेट सेक्टर को आज हमने देश के विकास में भागीदार बनने के लिए हमने निमन्त्रित किया है। देश में एंटरप्रिन्योर्स के लिए बेहतर माहौल बनाने के लिए सिम्पल टैक्स सिस्टम की शुरुआत की गई है। हजारों कम्प्लायेंसेज हैं, हमारे देश में आदत ऐसी है कि हर डिपार्टमेंट कहता है कि यह कागज लाओ, वह कागज लाओ। ऐसी सारी करीब 25 हजार कम्प्लायेंसेज हमने खत्म की हैं। आज मैं राज्यों से भी आग्रह करूंगा कि वे भी ढूंढ़-ढूंढ़कर ऐसे कम्प्लायेंसेज को खत्म करें, देश के नागरिकों को परेशानी हो रही है, उसको समझें हम लोग । आज देश में इस प्रकार के बैरियर्स हटाए जा रहे हैं। डोमेस्टिक इंडस्ट्री को लेवल प्ले फील्ड देने के लिए, हम एक के बाद एक कदम उठाते जा रहे हैं।

माननीय अध्यक्ष जी, आज देश उस पुरानी अवधारणा से बाहर निकल रहा है। हमारे देश में यह सोच बन गई है कि सरकार ही भाग्य-विधाता है, तुम्हें सरकार पर ही निर्भर रहना पड़ेगा, तुम्हारी आशा-अपेक्षाएं कोई पूरी नहीं कर सकता है, सरकार ही करेगी। सब कुछ सरकार देगी। हम लोगों ने इतना इगो पालकर रखा था और उसके कारण देश के सामर्थ्य को भी चोट पहुंची है। इसलिए सामान्य युवाओं के सपने, युवा कौशल, उसके रास्ते हमने नए सिरे से सोचना शुरू किया। सब कुछ सरकार करती है, ऐसा नहीं है। देशवासियों की ताकत अनेक गुना ज्यादा होती है। वे अगर सामर्थ्य के साथ, संकल्प के साथ जुड़ जाते हैं तो परिणाम मिलता है। आप देखिए, वर्ष 2014 के पहले हमारे देश में सिर्फ 500 स्टार्ट-अप्स थे। जब देश के नौजवानों को अवसर दिया जाता है, तब क्या परिणाम आता है जहां वर्ष–2014 के पहले 500 स्टार्ट-अप्स थे, अब इन सात वर्षों में 7,000 स्टार्ट-अप्स इस देश में काम कर रहे हैं। यह मेरे देश के युवाओं की ताकत है। उसमें यूनिकॉर्न बन रहे हैं और एक-एक यूनिकॉर्न, यानी उसकी हजारों करोड़ की वैल्यू तय हो जाती है। बहुत ही कम समय में भारत के यूनिकॉर्न सेंचुरी बनाने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। यह बहुत बड़ा अचीवमेंट है। पहले हजारों करोड़ रुपये की कंपनी बनने में दशकों लग जाते थे। आज हमारे नौजवानों की ताकत है और सरकार की नीतियों के कारण साल-दो साल के अंदर हजारों करोड़ के कारोबार को उनके आस-पास वह देख पा रहे हैं। …(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, आज हम स्टार्ट-अप यूनिकॉर्न्स के मामले में दुनिया में टॉप थ्री में पहुंच गए हैं। कौन हिन्दुस्तानी होगा, जिसको गर्व नहीं होगा? लेकिन ऐसे समय इस सरकार का अंतर्विरोध करने की जिनको आदत लग गई है, वे सुबह-सुबह शुरू हो जाते हैं। मैंने यहां देखा हमारे अधीर रंजन जी कह रहे थे कि क्या रखा है कि मोदी, मोदी, मोदी करते रहते हो। यही कह रहे थे न।

सब लोग मोदी, मोदी बोल रहे हैं, आप क्यों बोल रहे हैं? ... (व्यवधान) आप लोग सुबह होते ही शुरू हो जाते हैं। आप लोग एक पल भी मोदी के बिना नहीं बिता सकते हैं। अरे मोदी तो आपकी प्राणशक्ति है।

श्री अधीर रंजन चौधरी : मोदी जी प्रधान मंत्री हैं, इसलिए मोदी जी का नाम तो लेना ही पड़ेगा, क्या करें? ... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आपके एक माननीय सदस्य बोल रहे हैं न।

... (व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी : यह हमारी तहजीब है।

माननीय अध्यक्ष : आप बैठिए।

श्री नरेन्द्र मोदी : कुछ लोगों को देश के नौजवानों को, देश के एंटरप्रेन्योर्स को, देश के वेल्थ क्रिएटर्स को डराने में आनंद आता है, उनको भयभीत करने में आनंद आता है, उनको गुमराह करने में आनंद आता है। देश का नौजवान उनकी बातें सुन नहीं रहा है, इसके कारण देश आगे बढ़ रहा है। आज जो यूनिकॉर्न है, उसमें से कुछ मल्टीनेशनल कंपनियां बनने का सामर्थ्य रखते हैं।

लेकिन कांग्रेस में ऐसे लोग बैठे हैं, जो कहते हैं, जो हमारे उद्यमी हैं, उनके लिए कहते हैं और आपको भी जानकर आश्चर्य होगा कि वे कहते हैं कि ये उद्यमी लोग कोरोना वायरस का वैरिएंट हैं। बताइए, क्या हो गया है? क्या हमारे देश के उद्यमी कोरोना वायरस के वैरिएंट हैं? हम क्या बोल रहे हैं, किसके लिए बोल रहे हैं? कोई आपके अंदर बैठे तो जरा बोलो तो सही यह क्या हो रहा है? पार्टी का नुकसान हो रहा है, कांग्रेस पार्टी का नुकसान हो रहा है। ...(व्यवधान)

श्री गौरव गोगोई (कलियाबोर) : डबल ए वैरिएंट बोला था।

श्री नरेन्द्र मोदी : माननीय अध्यक्ष जी, जो लोग इतिहास से सबक नहीं लेते हैं, वे इतिहास में खो जाते हैं। ...(व्यवधान) यह मैं इसलिए कह रहा हूं कि जो 60 से 80 का दशक है, उनके सभी प्रमुख लोग उसमें आ जाते हैं, जो देश का नेतृत्व करते थे। मैं उस कालखण्ड की बात कर रहा हूं। उस 60 से 80 के दशक में क्या नेरेटिव होता था कि कांग्रेस के ही सत्ता साथी, कांग्रेस के साथ रहकर सुख भोगने वाले लोग, वही लोग, पंडित नेहरू जी की सरकार को और श्रीमती इन्दिरा ग्रांधी जी की सरकार को क्या कहते थे कि यह तो टाटा-बिड़ला की सरकार है, इस सरकार को टाटा-बिड़ला चला रहे हैं।

60 से 80 के दशक तक यही बातें बोली जाती थीं, नेहरू जी के लिए बोली जाती थीं, इंदिरा जी के लिए बोली जाती थीं और आपने उनके साथ सत्ता में भागीदारी की है, लेकिन उनकी आदतें भी ले लीं। आप भी उसी भाषा में बोल रहे हैं। मैं देख रहा हूं कि आप इतने नीचे गए हैं, इतने नीचे गए हैं, हां! मुझे लगता है कि आज पंचिंग बैग बदल गया है, लेकिन आपकी आदत नहीं बदली है। मुझे विश्वास है, यही लोग सदन में कहने की हिम्मत करते थे, बाहर तो बोलते ही थे, जहां मौका मिले, चुप नहीं रहते थे। वे कहते हैं कि मेक इन इंडिया हो ही नहीं सकता है, बताओ, इसमें आनंद आ रहा है। क्या कोई ऐसा हिन्दुस्तान के लिए सोच सकता है कि मेक इन इंडिया हो ही नहीं सकता है।

अरे भई! आपको तकलीफ होगी, तो हम आ कर करेंगे, ठीक है, ऐसा बोलो, लेकिन देश को क्यों गाली देते हो, देश के खिलाफ क्यों बोलते हो? मेक इन इंडिया हो नहीं सकता। मेक इन इंडिया का मजाक उड़ाया गया और आज देश की युवा शक्ति ने, देश के एन्टरप्रिन्योर्स ने करके दिखाया है और आप मजाक के विषय बन गए हैं।...(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी : आप दो करोड़ नौकरी की बात करिए।...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : मेक इन इंडिया की सफलता, आप लोगों को कितना दर्द दे रही है, मैं यह भली-भाँति समझ पा रहा हूं।...(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी : आपने दो करोड़ नौकरी का वादा किया था।...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : माननीय अध्यक्ष जी, मेक इन इंडिया से, कुछ लोगों को इस बात से तकलीफ है, क्योंकि मेक इन इंडिया का मतलब है – कमीशन के रास्ते बंद, मेक इन इंडिया का मतलब है – भ्रष्टाचार के रास्ते बंद, मेक इन इंडिया का मतलब है – तिजोरी भरने के रास्ते बंद, इसलिए मेक इन इंडिया का ही विरोध करो।...(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी : नीरव मोदी का इंडिया होगा।...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : भारत के सामर्थ्य को नजरअंदाज करने का पाप, देश के लघु उद्यमियों के सामर्थ्य का अपमान, देश के युवाओं का अपमान, देश की इनोवेटिव क्षमता का अपमान, देश में इस प्रकार का नकारात्मकता, निराशा का वातावरण, खुद निराश हैं, खुद सफल नहीं हो पा रहे हैं, इसलिए देश को असफल करने के लिए जो खेल चल रहे हैं, उनके खिलाफ देश का नौजवान बहुत जाग चुका है, जागृत हो चुका है।

माननीय अध्यक्ष जी, पहले जो सरकार चलाते थे, जिन्होंने 50 सालों तक देश की सरकारें चलाईं, मेक इन इंडिया को लेकर उनका क्या रवैया था, हम सिर्फ डिफेंस सेक्टर को देखें, तो सारी बातें समझ में आती थीं कि वे क्या करते थे, कैसे करते थे, क्यों करते थे और किसके लिए करते थे? पहले सालों में क्या होता था, नए इक्विमेंट्स खरीदने के लिए सालों तक प्रोसेस चलती थी और जब फाइनल निर्णय होता था, तब वह चीज पुरानी हो जाती थी। अब आप बताइए कि देश का क्या भला हुआ? वे आउट ऑफ डेटेड हो जाती थीं और हम पैसे देते थे। हम ने इन सारी प्रॉसेसज को

सिम्पलिफाई किया। सालों से डिफेंस सेक्टर के जो इश्यूज पेंडिंग थे, हम ने उनको निपटाने का प्रयास किया। पहले किसी भी आधुनिक प्लेटफॉर्म या इक्विपमेंट के लिए हमें दूसरे देशों की तरफ देखना पड़ता था। जरूरत के समय आपाधापी में आयुध खरीदा जाता था, यह लाओ, वह लाओ, भाई! कौन पूछता है, हो जाए। यहां तक की स्पेयर पार्ट्स के लिए भी हम अन्य देशों पर निर्भर रहे हैं। हम दूसरों पर निर्भर हो कर इस देश की सुरक्षा निश्चित नहीं कर सकते हैं। हमारे पास यूनिक व्यवस्था होनी चाहिए, हमारी अपनी व्यवस्था होनी चाहिए। रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर होना, यह राष्ट्र सेवा का भी एक बहुत बड़ा काम है और मैं देश के नौजवानों को भी आह्वान करता हूं कि आप अपने करियर में इस क्षेत्र को चुनिए, हम ताकत के साथ खड़े होंगे।

माननीय अध्यक्ष जी, ज्यादा-से-ज्यादा रक्षा उपकरण भारत में ही बनाएंगे, भारतीय कम्पनियों से ही खरीदेंगे, इसका प्रावधान भी इस बजट में किया गया है। बाहर से रक्षा उपकरण लाने के रास्ते बंद करने की दिशा में हमने कदम बढ़ाए हैं। हमारी सेनाओं की जरूरत पूरी होने के अलावा हम एक बड़े डिफेंस एक्सपोर्टर बनने का सपना लेकर चल रहे हैं। मुझे विश्वास है कि यह संकल्प भी पूरा होगा। मैं जानता हूँ कि रक्षा सौदों में बड़ी-बड़ी ताकतें पहले अच्छे-अच्छों को खरीद लेती थीं। ऐसी ताकतों को मोदी ने चुनौती दी है, इसलिए मोदी पर उनका नाराज होना ही नहीं, बल्कि उनका गुस्सा होना भी स्वाभाविक है। उनका गुस्सा प्रकट भी होता रहता है।

विपक्ष के हमारे कुछ साथियों ने यहाँ पर महँगाई का मुद्दा भी उठाया। अच्छा लगता, देश का भी भला होता, अगर आपकी यह चिन्ता तब भी होती, जब कांग्रेस के नेतृत्व में यूपीए की सरकार थी। यह दर्द उस समय भी होना चाहिए था। शायद आप भूल गए हैं। मैं ज़रा आपको याद दिलाना चाहता हूँ। कांग्रेस सरकार के आखिरी पाँच सालों में लगभग पूरे कार्यकाल में देश को डबल डिजिट महँगाई की मार झेलनी पड़ी थी।

हमारे आने से पहले यह स्थिति थी। कांग्रेस की ऐसी नीतियाँ थीं कि सरकार खुद मानने लगी थी कि महँगाई उसके नियंत्रण से बाहर है। वर्ष 2011 में तत्कालीन वित्त मंत्री जी ने लोगों से बेशर्मी के साथ कह दिया था कि महँगाई कम करने के लिए किसी अलादीन के जादू की उम्मीद न करें। यह आपके नेताओं की असंवेदनशीलता है। ...(व्यवधान)

चिदम्बरम जी इन दिनों इकोनॉमी पर अखबारों में लेख लिखते हैं। वे जब सरकार में थे, तब क्या कहते थे, आपके उस समय के नेता क्या कहते थे? वर्ष 2012 में उन्होंने कहा था कि "लोगों को 15 रुपए की पानी की बोतल और 20 रुपए की आइसक्रीम खरीदने में तकलीफ नहीं होती है, लेकिन गेहूँ-चावल पर एक रुपया बढ़ जाए, तो बर्दाश्त नहीं होता ।" ये आपके नेताओं के बयान हैं यानी महंगाई के प्रति कितना असंवदेनशीन रवैया था । यह चिंता का कारण है ।

महँगाई देश के सामान्य मानव से सीधा जुड़ा हुआ मुद्दा है। हमारी सरकार ने, एनडीए सरकार ने पहले दिन से ही सतर्क और संवेदनशील रहकर इस मसले को बारीकी से हैंडल करने का प्रयास किया। इसलिए हमारी सरकार ने महँगाई नियंत्रण को अपनी वित्तीय पॉलिसी का प्राथमिक लक्ष्य बनाया है।

माननीय अध्यक्ष जी, सौ साल में आई इतनी बड़ी महामारी के इस कालखंड में भी हमने प्रयास किया कि महँगाई और जरूरी चीजों की कीमत आसमान न छुए। ...(व्यवधान) सामान्य मानव के लिए ...(व्यवधान) दादा आपके काम की बात है, आप मजा लो न। आपके काम आएगा। मैं थोड़ा आगे बोलूँगा, तो आपके काम आएगा। ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, महंगाई और जरूरी चीज़ों की कीमत आसमान न छुए, सामान्य मानवी के लिए, खासकर गरीब के लिए, महंगाई बर्दाशत की सीमा से बाहर न हो। ...(व्यवधान) महंगाई को नियंत्रण में रखने के लिए हमने क्या किया, यह आंकड़े खुद बता रहे हैं। ...(व्यवधान) कांग्रेस के समय

जहां महंगाई दर डबल डिजिट में थी, दस प्रतिशत से ज्यादा थी, वहीं वर्ष 2014 से वर्ष 2020 तक महंगाई पांच प्रतिशत से कम रही है। ...(व्यवधान) कोरोना के बावजूद ...(व्यवधान) मैं आपको बोलने देना चाहता हूं, क्योंकि आगे आपको मजा आने वाला है। ...(व्यवधान) आप ज़रा इंतज़ार करो, मैं आ रहा हूं। ...(व्यवधान)

कोरोना के बावजूद इस साल महंगाई 5.2 प्रतिशत रही है और उसमें भी फूड इन्फ्लेशन तीन प्रतिशत से कम रहा है। ...(व्यवधान) आप अपने समय में वैश्विक परिस्थितियों की दुहाई देकर पल्ला झाड़ लेते थे। ...(व्यवधान) वैसे महंगाई पर कांग्रेस के राज में पंडित नेहरू जी ने लाल किले से क्या कहा, वह ज़रा आपको मैं बताना चाहता हूं। ...(व्यवधान) पंडित नेहरू जी, देश के पहले प्रधान मंत्री, लाल किले से बोल रहे हैं। ...(व्यवधान) देखिए, आपकी इच्छा रहती है कि मैं पंडित जी का नाम नहीं बोलता हूं, आज मैं बार-बार बोलने वाला हूं। ...(व्यवधान) आज तो नेहरू जी ही नेहरू जी। ...(व्यवधान) आज मजा लीजिए, आपके नेता कहेंगे मजा आ गया। ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, पंडित नेहरू जी ने लाल किले से कहा था। ...(व्यवधान) यह उस जमाने में कहा गया था, जब ग्लोब्लाइज़ेशन इतना नहीं था, नाम मात्र का भी नहीं था। ...(व्यवधान) उस समय नेहरू जी लाल किले से देश का संबोधन करते हुए क्या कह रहे हैं? कभी-कभी कोरिया में लड़ाई भी हमें प्रभावित करती है। इसके चलते वस्तुओं की कीमतें बढ़ जाती हैं। इति, नेहरू जी। ...(व्यवधान) भारत के पहले प्रधान मंत्री। ...(व्यवधान) कभी-कभी कोरिया में लड़ाई भी हमें प्रभावित करती है। ...(व्यवधान) इसके चलते वस्तुओं की कीमतें बढ़ जाती हैं और हमारे नियंत्रण से भी बाहर हो जाती हैं। ...(व्यवधान) देश के सामने देश का पहला प्रधान मंत्री हाथ ऊपर कर देता है। ...(व्यवधान) आगे क्या कहते हैं। ...(व्यवधान) देखो जी, आपके काम की बात है। ...(व्यवधान) पंडित नेहरू जी आगे कहते हैं, अगर अमेरिका में भी कुछ हो जाता है, तो इसका असर भी वस्तुओं की

कीमतों पर पड़ता है। …(व्यवधान) सोचिए, तब महंगाई की समस्या कितनी गंभीर थी कि नेहरू जी को लाल किले से देश के सामने हाथ ऊपर करने पड़े थे। …(व्यवधान) नेहरू जी ने यह तब कहा था। …(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, अगर कांग्रेस सरकार आज सत्ता में होती। …(व्यवधान) खैर, देश का नसीब है। …(व्यवधान) देश बच गया, लेकिन आज अगर आप होते, तो महंगाई को कोरोना के खाते में जमाकर के, झाड़ करके आप लोग निकल जाते। …(व्यवधान) लेकिन हम बड़ी संवेदनशीलता के साथ इस समस्या को महत्वपूर्ण समझते हुए उसका समाधान करने के लिए पूरी ताकत से काम कर रहे हैं। आज दुनिया में अमेरिका और ओईसीडी जैसे देशों में महंगाई करीब-करीब सात प्रतिशत है। हम किसी पर ठीकरा फोड़कर भाग जाने वालों में से नहीं हैं, हम ईमानदारी से प्रयास करने वाले लोग हैं, जिम्मेदारी के साथ देशवासियों के साथ खड़े रहने वाले लोग हैं।

माननीय अध्यक्ष जी, इस सदन में भी गरीबी कम करने के बड़े-बड़े आंकड़े दिए गए, लेकिन एक बात भूल गए। इस देश का गरीब इतना विश्वासघाती नहीं है कि कोई सरकार उसकी भलाई के लिए काम करे और वे उस सरकार को ही सत्ता से बाहर करने कर काम करें। ऐसा करना देश के गरीब के स्वभाव में नहीं है। आपकी यह दुर्दशा इसलिए हुई क्योंकि आपने मान लिया था कि नारे देकर गरीबों को अपने चंगुल में फंसाए रखोगे, लेकिन गरीब जाग गया, गरीब आपको जान गया। इस देश का गरीब इतना जागृत है कि आपको 44 सीटों पर समेट दिया, आपको 44 सीट पर लाकर रोक दिया। कांग्रेस वर्ष 1971 से के नारे पर चुनाव जीतती रही थी 'गरीबी हटाओ'। 40 साल बाद गरीबी तो हटी नहीं, लेकिन कांग्रेस सरकार ने नई परिभाषा दे दी। …(व्यवधान) माननीय अध्यक्ष जी, देश के नौजवानों को इन बातों का जानना बहुत जरूरी है और आप यह भी देखिए कि ये डिस्टर्ब तभी करते हैं, जब इन्हें

अंदाजा हो जाता है कि चोट बड़ी गहरी होने वाली है। ...(व्यवधान) इन्हें मालूम है कि आज मुसीबत में फंसे हैं और कुछ लोग बोलकर भाग जाते हैं और झेलना ऐसे बेचारों को पड़ता है।

माननीय अध्यक्ष जी, 40 साल बाद गरीबी तो नहीं हटी, लेकिन गरीबों ने कांग्रेस को हटा दिया और कांग्रेस ने क्या किया? ... (व्यवधान) कांग्रेस ने गरीबी की परिभाषा बदल दी। वर्ष 2013 में एक ही झटके में उन्होंने कागज पर कमाल करके 17 करोड़ गरीब लोगों को अमीर बना दिया। यह कैसे हुआ, इसकी सच्चाई देश के युवाओं को पता होनी चाहिए। मैं आपको उदाहरण देता हूं। आपको मालूम है कि हमारे देश में पहले रेलवे में फर्स्ट क्लास, सैकेंड क्लास और थर्ड क्लास होता था। फर्स्ट क्लास में दरवाजे की तरफ एक लाइन होती थी, सैकेंड क्लास में दो लाइन और थर्ड क्लास में तीन लाइन होती थी। इन्हें लगा कि थर्ड क्लास वाला मैसेज ठीक नहीं है, इसलिए इन्होंने एक लाइन निकाल दी। इनके तरीके ऐसे ही हैं और इन्हें लगता है कि गरीबी हट गई और इन्होंने सारे बेसिक नार्म्स बदलकर कह दिया कि ये 17 करोड़ लोग गरीब नहीं गिने जाएंगे। इस प्रकार से ये आंकड़े बदलने का काम करते रहे हैं।

अध्यक्ष जी, यहां कुछ तात्विक मुद्दों को उठाने की कोशिश की गई, मैंने तो समझने की बहुत कोशिश की, शायद कोई समझ पाया हो ऐसा मुझे कोई मिला नहीं है लेकिन जो समझ पाया होगा, तो मैं उससे समझने के लिए तैयार हूं। ऐसी-ऐसी बातें सुनता हूं।

माननीय अध्यक्ष जी, सदन में राष्ट्र को लेकर बातें हुईं। ये बातें हैरान करने वाली हैं। मैं अपनी बात रखने से पहले एक बात दोहराना चाहता हूं और मैं क्वोट कर रहा हूं – "यह जानकारी बेहद हैरत में डालने वाली है कि बंगाली, मराठे, गुजराती, तमिल, आंध्र, उड़िया, असमी, कन्नड़, मलयाली, सिंधी, पंजाबी, पठान, कश्मीरी, राजपूत और हिंदुस्तानी भाषा-भाषी जनता से बसा हुआ विशाल मध्य भाग कैसे सैकड़ों वर्षों से अपनी अलग पहचान बनाए है। इसके बावजूद इन सब के गुण-दोष कमोबेश

एक-से हैं। इसकी जानकारी पुरानी परम्परा और अभिलेखों से मिलती है। साथ ही, इस दौरान वे स्पष्ट रूप से ऐसे भारतीय बने रहे, जिनकी राष्ट्रीय विरासत एक ही थी और उनकी नैतिक और मानसिक विशेषताएं भी समान थीं ।" यह एक कोटेशन है ।

अध्यक्ष महोदय, हम भारतीयों की इस विशेषता को बताते हुए इस कोटेशन में दो शब्द गौर करने वाले हैं – "राष्ट्रीय विरासत " । और यह क्वोट पंडित नेहरू जी का है । नेहरू जी ने यह बात कही थी और अपनी किताब "भारत की खोज " में है । हमारी राष्ट्रीय विरासत एक है, हमारी नैतिक और मानसिक विशेषताएं एक हैं । क्या बिना राष्ट्र के यह संभव है? इस सदन का यह कहकर भी अपमान किया गया कि हमारे संविधान में राष्ट्र शब्द नहीं आता । ...(व्यवधान) संविधान की प्रस्तावना में लिखा राष्ट्र पढ़ने में न आए, यह हो नहीं सकता। कांग्रेस यह अपमान क्यों कर रही है, मैं इस पर विस्तार से अपनी बात रखूंगा। ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, राष्ट्र कोई सत्ता या सरकार की व्यवस्था नहीं है। हमारे लिए राष्ट्र एक जीवित आत्मा है। इससे हजारों साल से देशवासी जुड़े हुए हैं और जूझते रहे हैं। हमारे यहां विष्णु पुराण में कहा गया है और यह किसी भाजपा वाले ने नहीं लिखा है। विष्णु पुराण में यह कहा गया है-

‘उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः॥‘

यानी, समुद्र के उत्तर में और हिमालय के दक्षिण में जो देश है, उसे भारत कहते हैं तथा उनकी संतानों को भारतीय कहते हैं। विष्णु पुराण का यह श्लोक अगर कांग्रेस के लोगों को स्वीकार्य नहीं है, तो मैं एक और क्वोट इस्तेमाल करूंगा, क्योंकि कुछ चीजों से आपको एलर्जी हो सकती है। मैं क्वोट कह रहा हूं-

'एक क्षण आता है, मगर इतिहास में विरल ही आता है। जब हम पुराने से बाहर निकलकर नए युग में कदम रखते हैं, जब एक युग समाप्त हो जाता है, जब एक देश की लंबे समय से दबी हुई आत्मा मुक्त होती है।"

ये भी नेहरू जी के ही बोल हैं। आखिर किस नेशन की बात नेहरू जी कर रहे थे जी। ये नेहरू जी कह रहे हैं।

माननीय अध्यक्ष जी, यहाँ तमिल सेंटिमेंट को आग लगाने की भारी कोशिश की गई। राजनीति के लिए कांग्रेस की जो परम्परा अंग्रेजों से विरासत में आई दिखती है। ...(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी :... * की थी ब्रिटिश के लिए .....(व्यवधान) किसने की थी। ...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : तोड़ो और राज करो। ...(व्यवधान) तोड़ो और राज करो, बाँटों और राज करो। ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, तमिल भाषा के महाकवि और स्वतंत्रता सेनानी आदरणीय सुब्रह्मण्य भारती ने जो लिखा था, उसे मैं आज यहाँ दोहराना चाहता हूँ। तमिल भाषी लोग मुझे क्षमा करें, मेरे उच्चारण में कोई गलती हो तो, लेकिन मेरा आदर और मेरी भावना में कोई कमी नहीं है। सुब्रह्मण्य भारती जी ने कहा था:

Mannum imaya malai engal malaiye
Pannarum upadina nool engal nooley
Parmisai edhoru noolidhu poley
Ponnolir Bharatha nadengal naadey
Potruvam idhai emakkillai edey

* Not recorded

इसका भावार्थ जो उपलब्ध है, वह इस तरह का है।

सुब्रह्मण्य भारती जी कहते हैं। ...(व्यवधान) जो उन्होंने तमिल भाषा में कहा है, उसको मैं अनुवाद, जो भाव मुझे उपलब्ध हुआ है, मैं कह रहा हूँ:

"सम्मानित जो सकल विश्व में, महिमा जिनकी बहुत रही है,
अमर ग्रन्थ वे सभी हमारे, उपनिषदों का देश यही है।
गाएँगे यश हम सब इसका यह है स्वर्णिम देश हमारा,
आगे कौन जगत में हमसे, यह है भारत देश हमारा।।"

... (व्यवधान)

SHRI T. R. BAALU (SRIPERUMBUDUR): The law was rejected by you. ... (व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : यह सुब्रह्मण्य भारती जी की कविता का भाव है। यह वह संस्तुति है। मैं आज तमिल के सभी नागरिकों को सैल्यूट करना चाहूँगा। ...(व्यवधान)

जब हमारे सीडीएस रावत दक्षिण में हेलीकॉप्टर दुर्घटना में अकस्मात् उनका निधन हुआ और जब उनकी बॉडी तमिलनाडु में हवाई अड्डे पर ले जाने के लिए रास्ते से गुजर रही थी, मेरे तमिल भाई, मेरी तमिल बहनें लाखों की संख्या में घंटों तक रोड पर कतार में खड़ी रहीं थीं।

कोई सूचना नहीं, संदेश नहीं, इंतजार करते हुए खड़ी रही थीं और जब सीडीएस रावत की बॉडी वहाँ से निकल रही थी तब हर तमिलवासी गौरव के साथ हाथ ऊपर कर-करके आँख में आँसू के साथ कहता था वीर वणक्कम, वीर वणक्कम, वीर वणक्कम।

यह मेरा देश है। लेकिन कांग्रेस को हमेशा से इन बातों से नफरत रही है। विभाजनकारी मानसिकता उनके डीएनए में घुस गई है। ...(व्यवधान)

अंग्रेज चले गए, लेकिन बांटो और राज करो, इस नीति को कांग्रेस ने अपना चरित्र बना लिया है और इसीलिए ही आज कांग्रेस टुकड़े-टुकड़े गैंग की लीडर बन गई है। ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य, प्लीज बैठ जाइये। मैंने सभी माननीय सदस्यों को पर्याप्त समय और पर्याप्त अवसर दिया था।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : सदन के नेता बोल रहे हैं और यह अमर्यादित आचरण आपका ठीक नहीं है। यह सदन की गरिमा नहीं है।

... (व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : माननीय अध्यक्ष जी, जो लोकतंत्र की प्रक्रिया से हमें रोक नहीं पा रहे हैं, वह यहां अनुशासनहीनता करके हमें रोकने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन इसमें भी विफलता मिलेगी। ... (व्यवधान) माननीय अध्यक्ष महोदय, कांग्रेस पार्टी की सत्ता में आने की इच्छा खत्म हो चुकी है। लेकिन जब कुछ मिलने वाला नहीं है, तो कम से कम बिगाड़ तो दो। यह फिलोसफी आज निराशावादी है, लेकिन उस मोह में बर्बाद कर कर के छोड़ेंगे, इस मोह में देश में वह बीज बो रहे हैं, जो अलगाव की जड़ों को मजबूत करने वाले हैं। ...(व्यवधान)

सदन में ऐसी बातें हुईं कि जिसमें देश के कुछ लोगों को उकसाने का भरपूर प्रयास किया गया। अगर पिछले सात साल से कांग्रेस के हर कारनामे, हर गतिविधि को बारीकी से देखेंगे, अगर हर चीज को धागे में बांध कर देखेंगे तो इनका गेम प्लान क्या है, वह बिल्कुल समझ में आता है और मैं आज उसका खुलासा कर रहा हूं। ...(व्यवधान)

आपका गेम प्लान कुछ भी हो ...(व्यवधान) माननीय अध्यक्ष जी, ऐसे बहुत से लोग आए और चले गए। लाखों कोशिशें की गईं, अपने स्वार्थवश की गईं, लेकिन यह देश अजर-अमर है, इस देश को कुछ नहीं हो सकता। आने वालों को, इस प्रकार की कोशिश करने वालों को हमेशा कुछ न कुछ गंवाना पड़ा है। यह देश एक था, श्रेष्ठ था। यह देश एक है, यह देश श्रेष्ठ है और श्रेष्ठ रहेगा। इसी विश्वास के साथ हम आगे बढ़ रहे हैं। माननीय अध्यक्ष जी ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आपने जब बोला, मैंने आपको टोका या किसी ने टोका? यह गलत है।

... (व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : माननीय अध्यक्ष जी, यहां कर्तव्यों की बात करने पर भी ऐतराज जताया गया है। उससे भी कुछ लोगों को पीड़ा हुई है कि देश का प्रधान मंत्री कर्तव्य की बात क्यों करता है? कर्तव्य की चर्चा हो रही है। किसी बात को समझ के अभाव से या बद इरादे से, विकृति से गढ़ देना, विवाद खड़ा कर देना, ताकि खुद लाइमलाइट में रहें। मैं हैरान हूं कि अचानक कांग्रेस को अब कर्तव्य की बात चुभने लगी है। ...(व्यवधान) अधीर रंजन जी, आप बैठिये। बैठिये। अरे, आपको जिंदगी में बोलते रहना है, आपका वही काम है। ...(व्यवधान) आप लोग कहते रहते हैं कि मोदी जी नेहरू जी का नाम नहीं लेते हैं।

19.00 hrs

आज मैं आपकी मुराद बराबर पूरी कर रहा हूँ। ...(व्यवधान) देखिए, कर्त्तव्यों के संबंध में नेहरु जी ने क्या कहा था। ...(व्यवधान) मैं आज ज़रा उनका कोट सुनाता हूँ। ...(व्यवधान) माननीय अध्यक्ष जी, पंडित नेहरु जी, देश के प्रथम प्रधान मंत्री ने क्या कहा था, मैं कोट कर रहा हूँ।

…(व्यवधान) "मैं आपसे फिर कहता हूँ कि आजाद हिंदुस्तान है। आजाद हिंदुस्तान की सालगिरह हम मनाते हैं। … "(व्यवधान) आ गया समझ? … (व्यवधान) सीखो, सीखने में काम आएगा, तैयारी करो। …(व्यवधान) "लेकिन आजादी के साथ जिम्मेदारी होती है।कर्त्तव्य को ही दूसरे शब्दों में " री कहते हैंजिम्मेदा।इसलिए कोई समझ न हो तो मैं समझा दूं कि कर्त्तव्य को ही दूसरे शब्दों में जिम्मेदारी कहते हैं। …(व्यवधान) अब यह पंडित नेहरू का कोट है मैं आपसे फिर कहता हूँ कि " – आजाद हिंदुस्तान है।आजाद हिंदुस्तान की सालगिरह हम मनाते हैं ।थ लेकिन आजादी के सा जिम्मेदारी होती है।जिम् मेदारी, कर्त्तव्य खाली हुकूमत की नहीं, जिम्मेदारी हर एक आजाद शख्स की होती है। अगर आप उस जिम्मेदारी को महसूस नहीं करते, अगर आप समझते नहीं, तब पूरी तौर पर आप आजादी के माने नहीं समझे और आप आजादी को पूरी तौर से बचा नहीं सकते हैं।यह कर्त्तव्य " के लिए देश के प्रथम प्रधान मंत्री पंडित नेहरू जी ने कहा था। …(व्यवधान) लेकिन आप उसको भूल गए। …(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष जी, मैं सदन का ज्यादा समय नहीं लेना चाहता हूँ। …(व्यवधान) वे भी थक गए हैं। …(व्यवधान) माननीय अध्यक्ष जी, हमारे यहां कहा गया है कि –

"क्षणशः कणशश्चैव विद्यामर्थं च साधयेत् ।
क्षणे नष्टे कुतो विद्या कणे नष्टे कुतो धनम्"॥

अर्थात विद्या व ज्ञान के लिए एक-एक पल महत्वपूर्ण होता है। सम्पत्ति और संसाधनों के लिए एक-एक कण जरूरी होता है। एक-एक क्षण बर्बाद कर के ज्ञान नहीं हासिल नहीं किया जा सकता और एक-एक कण बर्बाद किया गया, छोटे-छोटे संसाधनों का समुचित प्रयोग नहीं किया गया तो संसाधन व्यर्थ हो जाते हैं। …(व्यवधान)

मैं कांग्रेस और उसके सहयोगियों से कहूंगा कि आप यह मंथन जरूर कीजिए कि कहीं आप इतिहास के इस महत्वपूर्ण अहम क्षण को नष्ट तो नहीं कर रहे हैं। मुझे सुनाने के लिए, मेरी आलोचना करने के लिए, मेरे दल को कोसने के लिए बहुत कुछ है। आप कर सकते हैं और आगे भी करते रहिए। मौकों की कमी नहीं है। लेकिन आजादी के अमृत काल का यह समय, 75 वर्ष का यह समय भारत की विकास यात्रा में सकारात्मक योगदान का समय है।

मैं विपक्ष से और यहां पर बैठे हुए सभी साथियों से और इस सदन के माध्यम से देशवासियों से भी आज़ादी के इस "अमृत महोत्सव " के पर्व पर आग्रह करता हूं, निवेदन करता हूं, अपेक्षा करता हूं कि आओ, इस आजादी के "अमृत महोत्सव " को हम नए संकल्पों के साथ, "आत्मनिर्भर भारत " बनाने के संकल्प के साथ एकजुट होकर लग जाएं, कोशिश करें । पिछले 75 सालों में जहां-जहां हम कम पड़े हैं, उसे पूरा करें और वर्ष 2047 के शताब्दी वर्ष को मनाने से पहले देश को कैसा बनाना है, उसके संकल्प को लेकर आगे बढ़ें। देश के विकास के लिए मिलकर काम करना पड़ेगा। राजनीति अपनी जगह पर है। हम दलगत भावनाओं से ऊपर उठ करके देश की भावनाओं को लेकर जीएं। चुनाव के मैदान में जो कुछ करना है, करते रहिए, लेकिन हम देश हित में आगे आएं, इसी एक अपेक्षा को रखता हूं।

जब आज़ादी के 100 वर्ष होंगे, ऐसे ही सदन में जो लोग बैठे होंगे, वे जरूर चर्चा करेंगे कि ऐसी मजबूत नींव पर, ऐसी प्रगति पथ पर पहुँची हुई 100 साल की उस यात्रा के बाद देश ऐसे लोगों के हाथों में जाए, ताकि उन्हें आगे ले जाने का मन करे। हम यही सोचें कि जो समय मिला है, उसका हम सदुपयोग करें। हमारे "स्वर्णिम भारत " के निर्माण में हम कोई कोताही न बरतें, पूरे सामर्थ्य के साथ उस काम में लगें।

माननीय अध्यक्ष जी, मैं फिर एक बार राष्ट्रपति जी के उद्बोधन पर धन्यवाद प्रस्ताव का अनुमोदन करता हूं और मैं इस सदन में चर्चा में भाग लेने वाले सभी माननीय सांसदों का फिर से एक बार धन्यवाद करते हुए आपने जो अवसर दिया, रोक-टोक की कोशिशों के बावजूद भी मैंने सभी विषयों को स्पर्श करने का प्रयास किया है। ...(व्यवधान)

बहुत-बहुत धन्यवाद।